छोटानागपुर की जनजातीय लोक चित्रकला : एक ऐतिहासिक अध्ययन

(गोदना, कोहबर एवं सोहराई के विशेष संदर्भ में)

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप रूपरेखा

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग (सामाजिक विज्ञान संकाय)

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निदेशक :

डॉ० राजकुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी :

सूरज कुमार
यू0जी0सी0 नेट
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो0 नं0 : 9608169378

छोटानागपुर की जनजातीय लोक चित्रकला : एक ऐतिहासिक अध्ययन (गोदना, कोहबर एवं सोहराई के विशेष संदर्भ में)

1. विषय का परिचय

झारखण्ड प्राकृतिक सम्पन्न राज्यों में से एक है। यह प्राकृतिक स्वरूप जंगल एवं जंगलों में पाए जाने वाली जड़ी–बुटी, खनिज एवं प्राकृतिक पूजक 32 प्रकार के जनजातीय के रूप में है। प्रत्येक जनजाति की अपनी एक अलग पहचान है। इनकी शारीरिक बनावट, भाषा, नृत्य, पूजा पद्धति जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार में एकरूपता नहीं पाई जाती है। प्रत्येक जनजाति अपनी लोकगीत, लोक वाद्ययंत्र एवं लोक चित्रकला के माध्यम से अपने भावों को प्रदर्शित करते हैं। इनके ये चित्र प्राकृतिक से संबंधित तथा धार्मिक मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए पर्व त्योहार या सामाजिक कार्य के दौरान या पूर्व में किया जाता है।

हजारीबाग के बड़कागाँव से शैल चित्रों की प्राप्ति हुई है, जिसे मध्य पाषण काल एवं ताम्रपाषाण काल की मानी गई है। ये चित्र सोहराई एवं कोहबर का आदि रूप माने जाते हैं। कोहबर का उल्लेख बाल्मिकी की रामायण से मिलती है।

कार्तिक महीने में जनजातीय समाज अपने कमजोर मकान की मरम्मत करते हैं। इसी समय जनजातीय समाज सोहराई पर्व मनाते हैं, जो मुख्यतः पशुधन से संबंधित होता है। इसी क्रम में घरों के दीवारों की लिपाई–पोताई करने के बाद पशु, पक्षी, पेड़–पौधों की चित्र अंकन करते हैं, जो सोहराई लोक चित्रकला के नाम से जाना जाता है। फसल काटने के पश्चात् सामाजिक दायित्व निभाना शुरू कर देते हैं, जो मुख्यतः वंश वृद्धि हेतु विवाह कार्य के रूप में होता है। इस अवसर पर कोहबर चित्रकला दीवारों में देखने मिलती है। कोहबर या खोबर का तात्पर्य गुफा में रहने वाले नवविवाहित जोड़ी से है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं एवं देवताओं का चित्र बनी होती है। जनजातीय समाज अपने शरीर को

सुन्दर बनाने के लिए अमिट आभूषण धारण करते हैं, जिसे गोदना या खोदा नाम से जाना जाता है। यह गोदना जनजातियों के लिए सामाजिक धार्मिक एवं परलौकिक विश्वासों पर है। जो एक नियत समय पर किया जाता है। सभी जनजातियों में गोदना के तरीके एवं शरीर के अंगों में किये गए गोदना में भी अंतर दिखाई पड़ता है। प्रारंभिक समय में लोक धारणा अनुरूप, प्रत्येक महिला–पुरूष को मांगलिक कार्य से पूर्व अनिवार्य रूप से करवाना पड़ता था। मिस्त्र में ईसा से 1300 साल पूर्व गोदना कला प्रचलित थी तथा साइबेरिया में 300 साल ईसा पूर्व गोदना का चलन था। भारत में साहित्यिक उल्लेख रामायण, महाभारत एवं कालिदास कृत रघुवंश में मिलता है।

इसके अलावे झारखण्ड तथा संथाल परगना में जादोपटिया, होड़–सोरवा, जेरेड कला एवं कोल्हान क्षेत्रों में कोल लोक चित्रकला पैतकार इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त थोपा चित्रकला, मंडवा चित्रकला, टोटका चित्रकला, तथा वैद्यनाथ इत्यादि हैं।

मानव का चिंतन विकासशील है, इसका प्रभाव लोक चित्रकला पर भी दिखाई पड़ती रही है। वर्तमान में रासायनिक रंगो का प्रयोग का प्रभाव है, जो दिखावत में अति सुन्दर लगते है परन्तु इसके क्षेत्र प्रभाव घरों की ओर आकर्षित नहीं कर पा रही है।

1.1 साहित्य समीक्षा

बी0 विरोत्तम की पुस्तक **''झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति''** में सोहराई, कोहबर, गोदना, लोक चित्रकला का उल्लेख मिलता है। कोहबर को मुण्डा जनजाति के वर–वधु के कमरा के रूप में उल्लेख किया है, इसके अलावे कोहबर को खरवार जनजाति की विवाह से संबंधित अनुष्ठान माना गया है। मुण्डा और चेरों में गोदना करवाने की आयु और शारीरिक अंगों का उल्लेख मिलता है। बुलु इमाम की पुस्तक **''हजारीबाग चित्रकला शैली''** में सोहराई चित्रकला एवं

कोहबर के बारे में उल्लेख मिलता है तथा इनके चित्रों में प्रयोग की जाने वाली रंगों के बारे में एवं तैयार करने का उल्लेख मिलता है। आदित्य प्रसाद सिन्हा की पुस्तक **''तुलिका'' (झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला)** में सोहराई एवं कोहबर को हजारीबाग की प्रमुख चित्रकला माना गया है। सोहराई में घर के बाहरी दीवार एवं भीतरी दीवार पर अगल–अलग चित्र बनाये जाते है, घर के भीतरी भाग पर पेड़ पशु–पक्षी, झुला, पुष्प आदि का चित्र अंलकृत करते हैं। कोहबर के चित्र में केला का वृक्ष, सांड़, घोड़ा, फूल आदि चित्र बनाये जाते हैं। गोदना गुदवाने की प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। गिरिधारी राम गौंझू की पुस्तक **''झारखण्ड की पारंपरिक कलाएँ''** में गोदना पर सूक्ष्म प्रकाश डाला गया है। इसमें सोहराई और कोहबर चित्रों को सदान और जनजातियों में बनाने की विधि तथा चित्रों के प्रकार का उल्लेख मिलता है। ज्ञानोत्तम विधि की पुस्तक **''झारखण्ड की पारम्परिक गृह निर्माण कला''** में सोहराई और कोहबर के रंगों को तैयार करने की उपलब्ध वस्तुओं का उल्लेख किया गया है। मनोज कुमार कपरदार की पुस्तक **''झारखण्ड की आदिवासी कला परम्परा''** में कोहबर चित्रकला का शुरूआत वर्तमान स्थिति लोककथा एवं चित्रों का संक्षिप्त वर्णन मिलता है, सोहराई में प्राकृतिक चित्रों के अतिरिक्त शिव, रसोई के उपकरण आदि चित्रों का उल्लेख है। गोदना के प्रकार, निश्चित आयु बनावट का संक्षिप्त वर्णन भी इस पुस्तक में मिलता है। जोवाकिम डुंगडुंग की पुस्तक **''खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन''** में इन तीनों जनजातियों के गोदना के समय–सीमा के उद्देश्य का जिक्र मिलता है। बहुरा उराँव की पुस्तक **''उराँव समाज विवाह एवं मृत्यु संस्कार''** में गोदना की मान्यताओं का सामान्य जानकारी मिलती है। एम जी0 हैलेट की **राँची गजेटियर** में मुण्डा जनजाति में व्याप्त गोदना का उल्लेख मिलता है। पी0सी0 राय चौधरी की **धनबाद गजेटियर** में गोदना का उल्लेख अंधविश्वास पर आधारित है। इनकी अन्य **गजेटियर संथाल परगना** से लोक चित्रकला की जानकारी मिलती है। **जर्नल ऑफ**

हिस्ट्रोरिकल रिसर्च, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में हन्ना माईल के द्वारा लिखित शीर्षक, जनजातीय धार्मिक अनुष्ठानों, पर्व एवं संस्कारों में दलित, गोदना के उम्र सीमा, उद्देश्य का उल्लेख मिलता है। **झारखण्ड एन्साइक्लोपीडिया खण्ड–4** में वर्णित है कि मुण्डा और उराँव सोहराई चित्र बनाते हैं। जिसमें कोहबर की विपरीत सोहराई चित्र काफी रंगीन होता है। खनिज सम्पदा के उत्खनन एवं विस्थापित होने के कारण कोहबर, सोहराई कला तथा क्षेत्र की गुफा चित्र भी विलुप्त हो रही है।

1.2 शोध रिक्ति

इन साहित्यों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि झारखण्ड की लोक चित्रकला से संबंधित विषय की रचनाएँ उपलब्ध है। लेकिन झारखण्ड के लोगों के लिए इनमें अप्रर्याप्त एवं संक्षिप्त विवरण मिलता है। मुण्डा, उराँव, संथाल एवं खड़िया की संस्कृति का विवरण प्राप्त होता है, परन्तु अन्य जनजातियों के पर्याप्त विवरण नहीं मिलता है। जनजातीय समाज किसी भी अनुष्ठान को उद्देश्य और मान्यता के अनुसार करते हैं, जिसका उल्लेख साहित्यिक रूप से कम प्राप्त होती है। जनजातीय समाज प्राकृतिक पूजक है। पहाड़–पर्वत, नदी–नाला, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, इनके पूज्य के साथ–साथ इनके टोटेमधारी भी है, परन्तु किसी पुस्तक में पर्याप्त रूप से नहीं मिलता है।

1.3 शोध समस्या

समस्या का आरंभ ही शोध की शुरूआत होती है। यह शोध विलुप्त होती लोक चित्रकला से है। भारतीय पश्चिमी सभ्यता को तीव्र गति से अपना रहे है और अपनी सभ्यता को छोड़ते जा रहे हैं। इससे जनजातियों की लोक चित्रकला बहुत प्रभावित हुआ है। जनजातीय समाज अपनी धर्म एवं संस्कृति तथा परम्परा को छोड़कर, पश्चिमी परम्परा की ओर आकर्षित होने लगा है।

1.4 शोध का उद्देश्य

- झारखण्ड की लोक संस्कृति का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करना।
- छोटानागपुर की जनजातीय लोक चित्रकला को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर उजागर करना।
- छोटानागपुर लोक चित्र को प्रकाश में लाना।
- छोटानागपुर लोक चित्र में जनजातीय महिलाओं के योगदान को प्रकाश में लाना।
- छोटानागपुर की चित्रकला मे धर्म एवं संस्कृति के समन्वय के महत्व को उजागर करना।
- छोटानागपुर की लोक चित्रकला का पर्यावरण के साथ संबंध को स्थापित करना।

1.5 शोध की परिकल्पना

- झारखण्ड की लोक संस्कृति में, चित्रकला शैली प्रमुख है।
- जनजातीय समाज अपने भावों का प्रदर्शन चित्र के माध्यम से करते हैं।
- धर्म संस्कृति एवं सामाजिक मान्यताएँ चित्रकला के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है।
- झारखण्ड के लोक चित्रकला में पर्यावरण के पुट है।
- झारखण्ड की लोक चित्रकला पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती आ रही है।
- झारखण्ड की लोक चित्रकला महिला प्रधान है।

2. शोध प्रारूप :

2.1 शोध विधि

इस शोध कार्य को ऐतिहासिक अनुसंधान विधि से अध्ययन किया जाएगा। इसका आधार मुख्यतः प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों पर आधारित होगा। प्राथमिक स्रोतों के रूप में अभिलेखागार, गजेटियर, मौखिक स्रोत, प्रश्नोत्तर, क्षेत्र

भ्रमण इत्यादि शामिल होगा। द्वितीय स्रोत के रूप में शोध विषय से संबंधित पुस्तक, पत्र–पत्रिका, समाचार पत्र, केन्द्रीय पुस्तकालय, राजकीय पुस्तकालय, जनजातीय शोध संस्थान, जनजातीय म्यूजियम, छोटानागपुर आर्ट रिसर्च डेवलपमेंट सोसाइटी, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चरल हेरिटेज इत्यादि से प्राप्त स्रोतों का आकलन किया जायेगा। वेब स्रोत में शोध गंगा, डिजिटल पुस्तकालय, ई आर्काइव इत्यादि का सहारा लिया जाएगा। चित्रकारों एवं जनजातीय महिलाओं से, समाज की बुद्धिजीवी से साक्षात्कार लेकर स्रोतों का आकलन किया जायेगा। लोक चित्रकला संबंधित प्राप्त स्थल का अवलोकन किया जाएगा।

2.2 आँकड़ा संग्रह हेतु उपकरण और तकनीक

- वर्तमान तक प्राप्त साहित्यिक स्रोतों का उपयोग किया जायेगा।
- शैल चित्र का अध्ययन किया जायेगा।
- घर के दीवारों से प्राप्त चित्रों का अध्ययन किया जायेगा।
- समाचार एवं पत्र–पत्रिका से महत्वपूर्ण स्रोतों का संग्रह किया जायेगा।
- प्रश्नावाली, साक्षात्कार से धार्मिक सामाजिक मान्यताओं की जानकारी लिया जायेगा।
- डिजिटल वेब का सहारा लिया जायेगा।
- गजेटियर, अभिलेखगार का सहारा लिया जायेगा।

2.3 आँकड़ों का विश्लेषण

शोध से संबंधित प्राप्त साक्ष्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा। छोटानागपुर क्षेत्र में भौगोलिक विभिन्नता के कारण सामाजिक धार्मिक परिवर्तन देखने मिलती है। इनकी भौगोलिक परिदृश्य के आधार पर विश्लेषण किया जायेगा।

3. शोध कार्य का महत्व

झारखण्ड का इतिहास गौरवपूर्ण रहा है, इसमें चित्रकला भी शामिल है। इसमें प्रमुख चित्रों में सोहराई, कोहबर, गोदना, जादोपटिया, पाईतकार, इत्यादि है। वर्तमान में झारखण्ड की ये लोक चित्रकला विलुप्त के कगार पर आ गई है। यद्यपि सरकार के द्वारा कार्य किये जा रहे हैं। शोध कार्य से इनकी ऐतिहासिक महत्व बढ़ेगी। छोटानागपुर के निवासी इस कला को रोजगार के रूप में अपना सकते हैं। इसके साथ कला को भी संरक्षण मिलेगा। पर्यावरण के प्रति संचेतना बढ़ेगी।

4. वर्तमान समय में विषय की प्रासंगिकता एवं आवश्यकता

उपरोक्त शोध इतिहास में उपयोगिता के आधार पर है। जनजातियों की इतिहास में स्पष्टता की कमी देखी जा सकती है। इस कमी को पूरा करने का प्रयास है। जनजातीय चित्रकला, वर्तमान जानकारी एवं उनकी उपयोगिता, उनके प्रति विश्वास के आधार पर होती है। पर्यावरण के प्रति उनकी दृष्टि को जनजाति को समझने के लिए उनके चित्रों के अध्ययन से ही संभव लगता है।

5. वर्तमान ज्ञान में योगदान :–

भारत की आजादी के बाद नए राज्यों की स्थापना की मांग शुरू हो गई, इसका मुख्य कारण संस्कृति में विभिन्नता है। झारखण्ड को अपनी अलग पहचान के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा, इनकी अलग मांग के पीछे अलग संस्कृति, भेष–भूषा, सामाजिक रीति रिवाज था, जिसमें लोक चित्रकला की भूमिका अग्रनीय थी। लोक चित्रकला के द्वारा सामाजिक रीति–रिवाज, धार्मिक, क्रियाकलाप, उनके जीवन में प्रकृति की भूमिका की जानकारी प्राप्त होगी, विलुप्त होती, उनकी लोक चित्रकला को समझा जा सकता है। लोक चित्रकला पक्के घरों में भी आ सकती है।

6. भविष्य के कार्य :

झारखण्ड में लोक चित्रकला पर्याप्त मात्र में उपलब्ध है। पैतकार, जादोपटिया, इत्यादि पर किया जा सकता है। ये कला विलुप्ति के कगार पर है। इस कला के कलाकार रोजगार विहीन होने लगे हैं।

7. प्रस्तावित अध्ययन

		भूमिका
प्रथम अध्याय	–	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
द्वितीय अध्याय	–	गोदना चित्रकला
तृतीय अध्याय	–	सोहराई चित्रकला
चतुर्थ अध्याय	–	कोहबर चित्रकला
पंचम अध्याय	–	जनजातीय चित्रकला का पर्यावरणीय अंतर्संबंध
		निष्कर्ष
		संदर्भ ग्रंथ सूची
		परिशिष्ट

प्राथमिक स्रोत –

- गजेटियर
- अभिलेखीय स्रोत
- प्रश्नोत्तर
- साक्षात्कार
- क्षेत्र भ्रमण
- जनजातीय पत्र–पत्रिकाएँ (चौमासा, मयूर, साक्ष्य कला का समय)

द्वितीयक स्रोत :

ग्रंथ सूची

- हेमन्त, झारखण्ड, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2004
- आदित्य प्रसाद सिन्हा, तुलिका (झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला) विकल्प प्रकाशन, दिल्ली, 2014
- उमेश कुमार वर्मा, बिहार के जनजातीय जीवन, किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी, 1991
- रवि सखालकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, 1985
- प्राणनाथ मांगे, भारत की समकालीन कला एक परिपेक्ष्य, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2001,
- सुनिल कुमार, भारतीय छापाचित्र कला (आदि से आधुनिक तक), भारतीय कला प्रकाशन, वाराणसी, 2000
- रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी अकादमी, जयपुर, 2002
- गिरिधारी राम गौझू, झारखण्ड के विविध आयाम (इतिहास, कला, दर्शन, लोक उत्सव) स्पर्धा प्रकाशन, जमशेदपुर, 2020
- शीलवंत सिंह एवं सारिका, भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
- अरूण कुमार, लोक चित्रकला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016
- प्रीति विश्वकर्मा, पुर्वांचल लोक चित्रकला, कला प्रकाशन वाराणसी, 2009
- बिमला चरण शर्मा, झारखण्ड की जनजातियाँ क्राउन पब्लिकेशन, राँची, 2006

❖ भीखू तिरकी, उराँव सरना (धर्म एवं संस्कृति) झारखण्ड झरोखा, राँची, 2001
❖ अशोक पागल, पुरात्तव और इतिहास की झारखण्डी धरोहर, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2004
❖ श्याम चरण दुबे, मानव और संस्कृति, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1982
❖ रमेश चन्द्र मीणा, आदिवासी लोक और संस्कृति, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद, 2020
❖ बी0 विरोत्तम, झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रथ अकादमी, पटना, 2006
❖ मनोज कुमार कपरदार, झारखण्ड की आदिवासी कला परम्परा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023
❖ गिरिधारी राम गौझू, शकुंतला मिश्र, झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2021
❖ जोवाकिम डुंगडुंग, खड़िया मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2014
❖ ज्ञानोत्तम विधि, झारखण्ड की पारंपरिक गृह निर्माण कला, पृथ्वी प्रकाशन, दिल्ली, 2020
❖ बहुरा उराँव, कुँडुख़ (उराँव) समाज के जन्म, विवाह एवं मृत्यु संस्कार, झारखण्ड झरोखा, राँची, 2020
❖ नीलिमा गुप्ता, भारतीय लोक कला (छत्तीसगढ़ के संदर्भ में), स्वाति पब्किेशन्स, दिल्ली, 2010

❖ अनुप कुमार, इंडियन फॉक एण्ड ट्राइबल आर्ट, डनोवेटिव इमप्रिंट, नई दिल्ली, 2018।

❖ उज्जल घोष, फॉक ट्रेडिशनल आर्ट एण्ड क्राफ्ट ऑफ झारखण्ड, इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्टस, नई दिल्ली, 2022

शोध निदेशक :

डॉ० राजकुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

शोधार्थी :

सूरज कुमार
यू0जी0सी0 नेट
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची।
मो0 नं0 : 9608169378